ORIGINAL RESEARCH PAPER

History

KEY WORDS:

प्राचीन काल में चम्पारण का महत्व : एक मूल्यांकन

Amit Kumar Gupta

Research Scholar, Department of History B.R. Ambedkar Bihar University, Muzaffarpur

चम्पारण बिहार का वह स्थान है जहाँ प्राचीन काल के साहित्यिक विवरण के साथ–साथ वृहद मात्रा में पुरातात्विक साक्ष्यों की विधमानता है। ये दोनों साक्ष्य मिलकर एक समृद्ध इतिहास का बोध कराते हैं। अगर सर्वप्रथम इस क्षेत्र का विवरण की व्याख्या करे तो वो शतपथ ब्राह्मण (1.4. 1.10) था जिसमें वर्णित विदेह माधव की आख्यायिका है। इसके अनुसार विदेह माधव, जो सरस्वती नदी के तट पर निवास करते थे, ने वैश्वानर अग्नि को मुख्य में धारण किया था। धृत का नाम लेते ही वह अग्नि मुख्य से निकल कर पृथ्वी पर आ गया और नदियों को जलाता हुआ पूर्व की ओर बढ़ गया। विदेह माधव तथा उनके पुरोहित गौतम रहूगण ने अनुकरण किया। किन्तु उत्तरगिरि (हिमालय) से बहने वाली सदानीरा नदी को नही जला सका। विदेह माधव द्वारा अपने निवास स्थान के विषय में पूछे जाने पर अग्नि ने उनसे सदानीरा के पूरब की ओर रहने का आदेश दिया। सदानीरा नदी की पहचान आज के गंड़क (गंड़की) नदी से किया गया है जो चम्पारण जिला के पश्चिम में प्रवाहित होती है।

इस आख्यायिका से स्पष्ट हो जाता है कि उत्तर वैदिक काल में आर्यों का निवास स्थल गड़क नदी के पूर्व का क्षेत्र था जिसे आर्य ''ब्रात्य क्षेत्र'' क्षेत्र कहते थे जो प्राकृत भाषा बोलते थे। आज के आधुनिक काल में गंडक नदी के पूर्व में चम्पारण जिला अवस्थित है। पश्चिम चम्पारण जिला का मुख्यालय बेतिया है। बेतिया शब्द ''ब्रात्य'' शब्द के समरूप प्रतित होता है।

बेतिया शब्द वेतिया का अपभ्रंश है। इस स्थान का महत्वपूर्ण विवरण बुद्धकालीन गणतंत्र के विवरण के साथ होता है। अलकप्प के बुली गणराज्य था जो आधुनिक बिहार प्रान्त के चम्पारण, शाहाबाद, मुजफ्फरपुर जिले के बीच स्थित था। बुलियों का वेठद्वीप (वेतिया) के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध था। यही संभवतः राजधानी थी। बुलि लोग बौद्ध धर्म के अनुयायी थे। महापरिनिर्वाण सूत्र के अनुसार बुद्ध की मृत्यु के बाद उन्होंने उनके अवशेष का एक भाग प्राप्त किया तथा उस पर स्तूप का निर्माण करवाया था।

अब इन बातों का भौगौलिक समानता के अनुरूप अध्ययन किया जाए तो कुछ बातें स्पष्ट होती है। पहला बेतिया की अवस्थित पश्चिम में गड़क नदी और पूर्व में बूढ़ी गड़क नदी के बीच स्थित है। यह क्षेत्र हिमालय के तराई का भाग है। जहां दलदली क्षेत्र की विधमानता और इसकी अवस्थिति दोनों नदियों के बीच द्वीप जैसी अवस्थिति है। बेतिया का नाम तराई क्षेत्रों में उत्पन्न होने वाले 'बेंत'' के नाम पर पड़ा है। यह समानता अलकप्प के बुलियों की राजधानी वेठद्वीप (वेतिया) से साम्य प्रतीत होता है।

दूसरा समानता यह है कि इस क्षेत्र में बौद्ध स्तूप की विधमानता है। हाल के खुदाई में ''केसरिया'' नामक स्थान से विश्व की सबसे ऊँची बौद्ध स्तूप पाया गया है। दूसरा बौद्ध स्तूप ''लौरिया नंदनगढ़'' में पाया गया है। इस क्षेत्र में बौद्ध स्तूप का पाया जाना यह बात स्पष्ट करता है कि यह क्षेत्र बौद्ध धर्म मानने वालों का रहा था। महापरिनिर्वाण सूत्र के अनुसार अलकप्प के बुली लोग बौद्ध धर्म के मानने वाले थे और साथ ही उन्होंने बुद्ध के अवशेष प्राप्त कर स्तूप का निर्माण किया था। पश्चिमी चम्पारण जिला में ही नरकटियागंज क्षेत्र में प्राचीन पुरातात्विक अवशेष विद्यमान है। इस अवशेष का अभी तक उत्खनन नहीं हो पाया है। संभवतः यह अवशेष बौद्ध स्तूप है क्योंकि इसकी अकारिकी बौद्ध स्तूप की तरह हैं इस अवशेष का स्थानीय नाम चानकीगढ़ है।

बुद्ध काल के पश्चात् मौर्य काल में इस क्षेत्र की विशिष्ट स्थिति रही है। भारत के विभिन्न क्षेत्र से अशोक के स्तंभ प्राप्त किए गए हैं। अशोक के स्तंभ के दो प्रतिरूप है। प्रथम वे स्तंभ जिन पर अभिलेख उत्कीर्ण है और दूसरा जो बीना अभिलेख के विद्यमान है। अभिलेख के युक्त स्तंभ की संख्या (7) सात है जो छः (6) भिन्न–भिन्न स्थानों में पाषाण स्तंभों पर उत्कीर्ण पाये गये हैं। ये इस प्रकार हैं :

(1) लौरिया नन्दनगढ़ : बिहार के चम्पारण जिले में स्थित है।
(2) लौरिया अरेराज : बिहार के चम्पारण जिले में स्थित है।
(3) रामपुरवा : बिहार के चम्पारण जिले में स्थित (दो स्तंभ)
(4) दिल्ली टोपरा : सहारनपुर (उत्तर प्रदेश) जिले में टोपरा नामक स्थल पर गड़ा हुआ था।
(5) दिल्ली मेरठ : फिरोजशाह तुगलक दिल्ली लाया।
(6) प्रयाग : पहले कौशम्बी में था।

अगर हम इन सभी स्थलों का अध्ययन करे तो चम्पारण क्षेत्र के महत्व स्पष्ट हो जाता है। इन सात स्तंभ अभिलेख में 4 स्तंभ चम्पारण के विभिन्न 3 स्थानों से प्राप्त होता है। सबसे बढ़कर मौर्य वंश का वंशीय चिन्ह ''मयूर'' का उत्कीर्ण लौरिया नंदनगढ़ स्तम्भ से ही होता है। इसके अलावा अन्य किसी स्तंभ से ''मयूर'' की आकृति प्राप्त नहीं होती है। यह तथ्य मौर्य वंश के काल में इस स्थल का महत्व वर्णित करता है।

इन सभी साहित्यिक स्त्रोत एवं पुरातात्विक स्थल भाग चम्पारण के अतीत का व्याख्या करता है। हलांकि अभी कई पुरातात्विक स्थलों का उत्खनन नहीं हो पाया है। इन क्षेत्रों के उत्खनन होने पर, इस क्षेत्र के गाथा के कई परत अभी खुलने बाकी है।

REFERENCES :

(1) अर्थववेद
(2) शतपथ ब्राह्मण
(3) महापरिनिर्वाण सूत्र
(4) Le Huu phuoc, Buddhist Architecture, Grafikal 2009
(5) Ray, Niharranjan (1975) Maurya and past Maurya Art : A study in social and formal contracts.
(6) महावंश गेगर का अनुवार – पृष्ठ – 27
(7) महावंश टीका
(8) हेमचंद : परिशिष्टपर्वन
(9) H.C. Ray chanduri (1988) – Indian in age of Nandas / chandragupta and Bindusara.
(10) Sircar, D.C. incription of Ashoka (1957)